DOI-10-53571/NJESR.2021.3.10.52-55

आधुनिकता के दौर में जनसंचार और हिन्दी

मौ0 इमरान खान
अध्यक्ष– हिन्दी विभाग
एम0जी0एम0 (पी0जी0) कॉलिज, सम्भल
mohdimranmgm@gmail.com

(Received:10 September 2021/Reviesed:25 September 2021Accepted 10 october/Published:20 October 2021)

आधुनिकता के इस दौर में जनसंचार माध्यमों का हमारे जीवन में इतना महत्व बढ़ चुका है कि हम इन संचार माध्यमों के बिना एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा सकते, अर्थात् आज के युग में मानव जीवन और नवीन जनसंचार माध्यम एक दूसरे के पूरक हैं। इसीलिए इस सूचना क्रांन्ति का भी युग कहा जा सकता है। इन संचार माध्यम से हिन्दी को बल मिला है। वह भी अवर्णनीय है। मानव जीवन के इतिहास में अब तक के दौर में यह पहली बार हुआ है कि जब सूचना कान्ति इतनी अधिक महत्वपूर्ण बन गई है।

आधुनिक युग में जनसंचार का मानव जीवन में बहुत योगदान है। यह भी पूर्ण सत्य है कि पृथ्वी पर जीव का उद्भव् और मानव का विकास संचार प्रणाली के माध्यम से ही हआ है। मनुष्य से लेकर परिवार, समाज, देश विदेश और मानव जीवन के कल्याण में जनसंचार माध्यमों का बहुत अहम् योगदान है। चन्द्रकुमार के अनुसार (भूतपर्व वरिष्ठ सम्पादक 'आज')'' आज जनसंचार माध्यम विज्ञान की प्रगति और तकनीकी विकास के साथ–साथ मानवीय जीवन में परिवर्तन के सर्वशक्तिशाली साधन बन गये है। सूचना और विचार के सम्प्रेषण से मानव मन को प्रभावित करने के लिए आज के जनसंचार माध्यम जिस तेजी और मजबूती के साथ लोकमत बनाने या बदलने की क्षमता रखते हैं वैसा सामाजिक क्षेत्र का कोई उपकरण नहीं रखता। ''1 इन संचार माध्यमों ने दुनिया को विश्वग्राम में तबदील कर दिया है जहाँ पलक झपकते ही दुनिया के किसी भी कोने की जानकारी कम खर्च में आसानी से प्राप्त की जा सकती है।

इन जनसंचार के अन्तर्गत मुद्रण माध्यम, इलैक्ट्रॉनिक माध्यम, नवइलैक्ट्रॉनिक इण्टरनेट, पेजर, सेल्यूलर फोन, फैक्स, ई–मेल कम्यूनिकेटर, लैपटाप, वी0सी0डी0, डी0वी0डी0 आदि माध्यम हैं। प्रसिद्ध जनसम्पर्क अधिकारी एवं जनसंचारवेत्ता श्री राजेन्द्र जी का मत है, ''जनसंचार को यदि विभिन्न माध्यमों मौखिक एवं मुद्रित शब्द, दृश्य, श्रव्य, साधन, प्रचार , सामग्री, चलचित्र रेडियो दूरदर्शन आदि सभी इलैक्ट्रॉनिक उपकरर्णो सरचंना और उनके प्रयोग का नाम विज्ञान मान लिया जाए तो जनसम्पर्क उस कला का कहेगे, जिसकी सहायता से जनसंचार के माध्यमों का प्रयोग करके पब्लिसिटी या प्रचार के लक्ष्यों में अधिक से अधिक सफलता प्राप्त की जा सकती है।''2

आज यह जनसंचार माध्यम राजनीति तथा आर्थिक ताकत का माध्यम भी हैं। इस संचार क्रांन्ति ने न सिर्फ ज्ञान के प्रवाह को नवीन दिशा प्रदान की है, बल्कि इसने समृद्धि और ताकत की परिभाषा ही बदल दी है। आज विश्व का वही देश सबसे अधिक शक्तिशाली और समृद्ध है, जो सूचना क्रान्ति के क्षेत्र में सबसे अधिक अग्रणी है। सूचना के इस युग में हर चीज इतनी तेजी के साथ बदल रही है, क्या भाषा संस्कृति क्या विचार, क्या फैशन । विशेष रूप से नवइलैक्ट्रॉनिक उपकरणों जैसे सेल्यूलर फोन, कम्प्यूटर इण्टरनेट, पेजर, कम्यूनिकेटर, फैक्स वी0सीडी0, डी0वी0डी0 आदि ने हमारे जीवन में इतना अधिक परिवर्तन ला दिया है कि एकाएक हमें विश्वास ही नहीं होता । इन संचार माध्यमों से हिन्दी को भी बहुत अधिक बल मिला है। अब तक जो भाषा गैर आर्थिक समाजशास्त्रीय संचार का माध्यम थी, वहीं हिन्दी अब अर्थिक संचार के क्षेत्र में पहुँच चुकी है। आज जो लोग हिन्दी का विरोध कर रहे हैं। उन्हें यह बात भलीभाँति समझ लेनी चाहिए कि हिन्दी विश्व भाषा बनती जा रही है। विदेशों में हिन्दी पढ़ने वालो की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। हिन्दी आज विश्व भर में लगभग 100 करोड़ से ज्यादा लोगों द्वारा प्रयोग में लाई जा रही है। हिन्दी अब सिर्फ उपदेश की भाषा नहीं रहीं, बल्कि अब वह जनसंपर्क और बाजार की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित होती जा रही है। ''जनसंचार माध्यमों में आज हिन्दी का जो स्वरूप हमारे समक्ष है, वह शुद्ध साहित्यिक अवधारणा से भिन्न है। लेकिन यह तथ्य है कि यह नयी बनती हिन्दी, चंद साहित्य सर्जकों, साहित्य उपासकों और भक्तों की हिन्दी न होकर सही मायने में आम व्यवहार की हिन्दी बनी है।''3

आज हम जिस सूचना तकनीकी के युग में रह रहे हैं। इसे सामान्यतः हाईटैक युग के नाम से पुकारते हैं। इण्टरनेट के प्रयेाग ने तो हिन्दी की दुनिया ही बदल दी। आज इण्टरनेट से जुड़ जाने के बाद अनेक आश्चर्यजनक कार्य कर सकते हैं। आप अपने कम्प्यूटर पर दुनिया भर की हजारों पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, लेखों, चित्रों और अखवारों का वाचन भी प्राप्त कर सकतें हैं। साथ ही मल्टीमीडिया या बहुमाध्यम प्रणाली से कम्प्यूटर पर चलचित्रों, फिल्म, गीत संगीत का भी आनन्द उठा सकते है। इस चमात्कारी प्रणाली के द्वारा विश्वकोशों की सूचना पलक झपकते ही आसानी से मिल जाती है। व्यापरियों को भी विश्व के विभिन्न स्थानों के बाजार भाव का पता आसानी से लगा सकते हैं। मोबाइल फोन पर हिन्दी के एस0एम0एस0 के माध्यम से भी हिन्दी के व्यवहारिक उपयोग को काफी बल मिला है। आज फिल्म, , टेलीविजन, उपग्रह चेनलों आदि से जनसंचार माध्यमों हिन्दी का इतना व्यापक प्रयोग हो रहा है। हिन्दी में सबसे अधिक फिल्में बन रही हैं। टी0वी0 पर अनेक चैनल हिन्दी के कार्यक्रमों को दिखा रहे हैं। दूसरी भाषाओं की फिल्में हिन्दी में डब हो रही है। आज के इस सूचना क्रांन्ति युग में विज्ञापन भी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है अर्थात आधुनिक समय में विज्ञापन तथा जनसंपर्क का घनिष्ठ सम्बन्ध है। हिन्दी इसके के लिए उपयुक्त माध्यम है, क्योंकि इसके द्वारा जनता में एक सकारात्मक अभिव्यक्ति पैदा होती है, ''विज्ञापन एक ऐसा सम्प्रेषण का शक्तिशाली माध्यम है जिसका प्रयोग अन्य व्यक्तियों द्वारा कार्य करने के उददेश्य से किया जाता है। यदि आप समाज के बहुत बड़े वर्ग से कुछ करवाना चाहते हैं।तो विज्ञापन व्यक्तियों को निरन्तर अपने उददे्श्य के अनुरूप मनाने की एक कला है।''4

वर्तमान समय में विज्ञापन एक महान व्यापार है। जिससे जुड़कर लाखों करोड़ों लोग अपनी जीविका चला रहे हैं। व्यापार की दृष्टि से विज्ञापन बोलने वाला मानव है। जिसके माध्यम से सूचनाएं जन सामान्य तक पहुँचती हैं। जो उपभोक्ता को वस्तु परखने की समझ देती है जिससे उपभोक्ता वस्तु खरीदने के सम्बन्ध में सही निर्णय ले सके। सभी व्यवसायिक कंपनियों अपने विज्ञापन हिन्दी में देने के लिए बैचेन हैं। इन अर्थों मे ं हिन्दी अधिक जनतांत्रिक एवं लोकप्रिय बनती जा रही है। अब सवाल यही उठता है कि आज जनसंचार माध्यमों तथा दैनिक व्यवहार में जिस भाषा का प्रयोग हिन्दी के रूप में हो रहा है। वह अच्छी है या बुरी यह बात तो अलग है। वह हिन्दी या कुछ और है तो आलोचक यही व्यग्यात्मक जवाब देंगे कि वह हिन्दी नहीं बल्कि एक नवीन मिश्रित भाषा हिंगलिश है जिसमें हिन्दी कम अंग्रेजी ज्यादा है। आइए कुछ उदाहारण देखें–

- एक नया टूथपेस्ट Try किया दांतो के साथ Experiment मै अपने बच्चों के साथ Experiment कभी नहीं करता। ..... आप भी मत कीजिए।

- Simplicity में उद्भूत शक्ति है शुक्र है आज की भाग दौड़ भरी जिन्दगी में कुछ तो Simple है।

- घमौरी सिर्फ खुजली होना, त्वाचा का विकार है, नाइसिल लागइये, जल्द आराम पाईये। दूसरों की भाषा को हम ज्यादा दिनों तक नही ढो सकते अर्थात हम हिंगलिश प्रयोग अधिक दिनों तक नहीं कर सकते। हमें अपनी मातृभाषा को अपनाना ही होगा, नही तो स्वयं हिन्दी अपने निखरे हुए रूप में सामने आने लगेगी यह बात सही है कि हिन्दी का सबसे ज्यादा प्रचार–प्रसार जनसंचार माध्यमों के द्वारा ही हुआ।

अन्तः में सुप्रसिद्ध दार्शनिक कंफ्यूसियस के इस कथन की ओर ध्यान दिलाना चाहेंगें एक बार पूछा गया कि आप सबसे पहले क्या ठीक करेंगें? उसने उत्तर दिया भाषा। ''क्यों, भाषा ही क्यों।'' तो उसका उत्तर तथा – यदि हमारी भाषा ठीक नही होगी तो हम अपने भाव व्यक्त नहीं कर सकेगें। जब भाव ही समझ आयेगें तो हम न्याय नहीं कर सकेंगे। जब न्याय नही कर सकेगें तो असंतोष होगा।जब असंतोष होगा तो बगावत फैलेगी,जब बगावत फैलेगी तो राज्यकहाँ रहेगा। '' 5

अतः हम निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि भाषा ही जनसंचार का सशक्त माध्यम होती है। भाषा किसी भी देश की उन्नति व विकास का माध्यम बनती है। इस सन्दर्भ में हिन्दी के महान लेखक भारतेन्दु हरिचन्द्र की यह पक्तियाँ आज भी प्रासंगिक है–''निज भाषा उन्नति अहै, सव उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय कौ सूल।।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

01. डॉ0 अर्जुन तिवारी जनसंचार ओर हिन्दी पत्रकारिता, संस्करण 2004 (प्रस्तावना से)

02. दृष्टव्यः जनसंचार (सम्पा राधेश्यामशर्मा)चण्डीगढ़, हरियाणा साहित्य अकादमी 1988 पृ0 268.

03. अभिनव भारती (सम्पादक–आशुतोष कुमार) वार्षिक शोध पत्रिका (2006–07) पृष्ठ 348

04. प्रो0 हरिमोहन, आधुनिक जनसंचार ओर हिन्दी द्वितीय संस्करण 2003 पृष्ठ 142–143

05. डॉ0 तारेश भाटिया, आधुनिक विज्ञापन ओर जनसम्पर्क द्वितीय संस्करण 2004 पृष्ठ 10